eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 10, October 2023

राममनोहर लोहिया के राजनीतिक एवं सामाजिक विचार

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 15 September 2023 Accepted and Reviewed: 25 September 2023, Published : 01 October 2023

Abstract

राममनोहर लोहिया भारतीय राजनीति और समाज सुधार के एक प्रमुख विचारक थे। उन्होंने समाजवाद, जाति उन्मूलन, समानता और आर्थिक स्वतंत्रता पर विशेष जोर दिया। उनका मानना था कि भारत में लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए जातिवाद, पूंजीवाद और गैर–बराबरी को समाप्त करना आवश्यक है। यह शोध पत्र उनके राजनीतिक एवं सामाजिक विचारों का विस्तृत अध्ययन करता है।

कीवर्ड– राममनोहर लोहिया, समाजवाद, जाति उन्मूलन, समानता, आर्थिक स्वतंत्रता, लोकतंत्र, भारतीय राजनीति।

Introduction

डॉ. राममनोहर लोहिया भारतीय राजनीति और समाज सुधार के एक प्रमुख विचारक थे, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्र भारत में समाजवादी विचारधारा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे केवल एक राजनेता ही नहीं, बल्कि समाज सुधारक और क्रांतिकारी चिंतक भी थे। उन्होंने अपने विचारों के माध्यम से भारतीय समाज की विभिन्न समस्याओं, विशेषकर आर्थिक असमानता, जाति व्यवस्था, लैंगिक भेदभाव और लोकतंत्र की चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत किया।

लोहिया का मानना था कि भारत में सच्चे लोकतंत्र की स्थापना तभी संभव है, जब सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर समानता स्थापित हो। उन्होंने समाजवाद को केवल एक आर्थिक प्रणाली न मानकर इसे संपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बताया। उन्होंने गांधीवादी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए, अपने मौलिक चिंतन के आधार पर एक विशिष्ट भारतीय समाजवादी दृष्टिकोण विकसित किया।

उनका संघर्ष केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि वे सामाजिक और आर्थिक न्याय के भी प्रबल समर्थक थे। उन्होंने महिलाओं, दलितों, किसानों और मजदूरों के अधिकारों के लिए कई आंदोलनों का नेतृत्व किया और समाज में व्याप्त अन्यायपूर्ण प्रथाओं के विरुद्ध संघर्ष किया।

यह शोध पत्र डॉ. लोहिया के राजनीतिक एवं सामाजिक विचारों की गहन पड़ताल करता है और उनके योगदान को समकालीन परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करता है।

डॉ. राममनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च 1910 को उत्तर प्रदेश के अकबरपुर में हुआ था। उनके पिता हीरालाल एक अध्यापक थे और स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। लोहिया की प्रारंभिक शिक्षा बनारस और पटना में हुई। उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय में दाखिला लिया और बाद में जर्मनी के बर्लिन विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। उनकी शोध का विषय था 'राष्ट्रीयता पर समाजवादी दृष्टिकोण'। डॉ. लोहिया भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी से

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 10, October 2023

अत्यधिक प्रभावित हुए और असहयोग आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। वे कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापकों में से एक थे और बाद में समाजवादी आंदोलन के एक प्रमुख स्तंभ बने।

स्वतंत्रता के बाद, उन्होंने कांग्रेस से अलग होकर समाजवादी आंदोलन को नई दिशा दी। वे गैर–कांग्रेसवाद के सिद्धांत के प्रणेता थे और सामाजिक न्याय, जाति प्रथा उन्मूलन और महिलाओं के अधिकारों के प्रबल समर्थक रहे। उन्होंने जाति तोड़ो आंदोलन चलाया और समाजवादी नीतियों को लागू करने पर बल दिया।

डॉ. लोहिया का निधन 12 अक्टूबर 1967 को नई दिल्ली में हुआ, लेकिन उनके विचार और दर्शन आज भी प्रासंगिक हैं और समाजवादी राजनीति में एक प्रेरणास्त्रोत बने हुए हैं।

राजनीतिक विचार– डॉ. लोहिया ने भारत की राजनीतिक व्यवस्था पर व्यापक विचार व्यक्त किए। वे भारतीय समाज में व्याप्त असमानता, जातिवाद और पूंजीवादी व्यवस्था के घोर विरोधी थे। उन्होंने कहा कि भारत को स्वतंत्रता केवल राजनीतिक रूप में ही नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक रूप में भी प्राप्त करनी चाहिए।

1. लोकतंत्र और समाजवाद– लोहिया का मानना था कि भारतीय लोकतंत्र को सशक्त बनाने के लिए समाजवाद आवश्यक है। उन्होंने कहा कि समाजवाद केवल आर्थिक समानता नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक और राजनीतिक क्रांति है। उन्होंने बहुजन समाज की उन्नति के लिए राजनीति में पिछड़े वर्गों को अधिक प्रतिनिधित्व देने की वकालत की।

उन्होंने 'सप्तक्रांति' का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने सात प्रमुख सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को चिह्नित किया, 1) स्त्री–पुरुष समानता, 2) जातिवाद का अंत, 3) आर्थिक विषमता का उन्मूलन, 4) रंगभेद का विरोध, 5) उपनिवेशवाद का विरोध, 6) लोकतंत्र का सशक्तिकरण, और 7) व्यक्तिगत स्वतंत्रता। ये सात बिंदु उनके समाजवादी दृष्टिकोण की बुनियाद बने।

2. जातिवाद का उन्मूलन– लोहिया ने जातिवाद को भारतीय समाज के विकास में सबसे बड़ी बाधा बताया। उन्होंने जाति तोड़ो आंदोलन चलाया और लोगों को सामाजिक समानता के लिए प्रेरित किया। उनका मानना था कि जातिगत भेदभाव को समाप्त किए बिना भारत में सच्चे लोकतंत्र की स्थापना संभव नहीं है।

उन्होंने 'पिछड़ा पावे सौ में साठ' का नारा दिया, जिसका अर्थ था कि समाज के पिछड़े वर्गों को राजनीतिक और आर्थिक सत्ता में 60ः प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। यह विचार सामाजिक न्याय की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम था और आगे चलकर मंडल आयोग की नीतियों का आधार बना।

3. आर्थिक समानता– लोहिया ने आर्थिक असमानता को मिटाने पर बल दिया। वे पूंजीवादी व्यवस्था के घोर विरोधी थे और समाजवादी आर्थिक नीतियों के पक्षधर थे। उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र को मजबूत करने, स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देने और गरीबों के लिए विशेष आर्थिक नीतियों को लागू करने की वकालत की।

उनका मानना था कि भारत जैसे देश में पूंजीवाद और समाजवाद का संतुलन होना चाहिए। उन्होंने 'समानता और स्वतंत्रता' दोनों को एक साथ रखने पर जोर दिया, जिससे समाज में आर्थिक विकास और

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 10, October 2023

सामाजिक न्याय का सही मिश्रण हो सके। वे चाहते थे कि छोटे उद्योगों और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाए ताकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हो।

4. गैर–कांग्रेसवाद की नीति– लोहिया भारतीय राजनीति में बहुदलीय प्रणाली के समर्थक थे। उन्होंने कांग्रेस के वर्चस्व को तोड़ने के लिए 1967 में गैर–कांग्रेसवाद की नीति अपनाई। इस नीति के तहत उन्होंने सभी गैर–कांग्रेसी दलों को एक मंच पर लाने की कोशिश की, जिससे कांग्रेस के खिलाफ एक मजबूत विपक्ष खड़ा किया जा सके।

1967 के विधानसभा चुनावों में इस नीति का असर दिखाई दिया, जब देश के विभिन्न राज्यों में कांग्रेस के खिलाफ गठबंधन सरकारें बनीं। यह भारतीय राजनीति में गठबंधन राजनीति की शुरुआत थी, जो आगे चलकर राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभावी हुई।

5. विदेश नीति और राष्ट्रवाद– लोहिया की विदेश नीति भारत की स्वायत्तता और आत्मनिर्भरता पर केंद्रित थी। वे गुटनिरपेक्षता के समर्थक थे और भारत को किसी भी महाशक्ति के प्रभाव से मुक्त देखना चाहते थे। उन्होंने कहा कि भारत को अपने संसाधनों पर निर्भर रहकर विकास करना चाहिए, न कि विदेशी मदद पर।

वे पाकिस्तान के साथ बेहतर संबंधों के पक्षधर थे लेकिन उन्होंने चीन की विस्तारवादी नीतियों की आलोचना की। उन्होंने भारतीय सेना की मजबूती पर जोर दिया और कहा कि भारत को अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए।

6. समाजवादी राजनीति और चुनाव सुधार– लोहिया ने भारतीय चुनाव प्रणाली में सुधार की जरूरत बताई। उन्होंने धनबल और बाहुबल की राजनीति का विरोध किया और चुनावी खर्च को सीमित करने की मांग की। उनका मानना था कि चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाने के लिए कठोर कानूनों की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि संसद और विधानसभाओं में महिलाओं और पिछड़े वर्गों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व होना चाहिए। वे इस विचार के पक्षधर थे कि राजनीति केवल अभिजात्य वर्ग तक सीमित न रहे, बल्कि इसमें समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित हो।

सामाजिक विचार– डॉ. लोहिया केवल एक राजनीतिक विचारक ही नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक सुधारक भी थे। उन्होंने महिलाओं, दलितों, किसानों और मजदूरों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

1. महिलाओं की समानता– लोहिया ने महिलाओं को समान अधिकार देने की पुरजोर वकालत की। उन्होंने कहा कि जब तक महिलाओं को बराबरी का दर्जा नहीं मिलेगा, तब तक समाज में सच्ची समानता नहीं आ सकती। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी पर विशेष जोर दिया।

उन्होंने 'स्त्री और समाज' विषय पर कई महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। उनका मानना था कि स्त्री–पुरुष समानता केवल कानून से नहीं, बल्कि सामाजिक सोच में बदलाव लाकर ही संभव हो सकती है। उन्होंने महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने पर भी जोर दिया और कहा कि उन्हें समाज में वही अधिकार मिलने चाहिए जो पुरुषों को प्राप्त हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 10, October 2023

2. जातिवाद और सामाजिक न्याय– लोहिया जातिवाद के घोर विरोधी थे। उन्होंने 'जाति तोड़ो' आंदोलन चलाया और समाज में समरसता लाने के लिए कई प्रयास किए। उनका मानना था कि जातिगत भेदभाव सामाजिक और आर्थिक प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है। उन्होंने दलितों और पिछड़े वर्गों को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए शिक्षा और आर्थिक सहयोग को अनिवार्य बताया। उन्होंने 'पिछड़ा पावे सौ में साठ' का नारा दिया, जिसका उद्देश्य था कि समाज के पिछड़े वर्गों को सरकारी नौकरियों और राजनीतिक प्रतिनिधित्व में 60% भागीदारी दी जाए। यह विचार आगे चलकर मंडल आयोग की रिपोर्ट में एक महत्वपूर्ण आधार बना।

3. भाषा और संस्कृति– लोहिया ने भारतीय भाषाओं के महत्व को स्वीकारते हुए अंग्रेजी के वर्चस्व का विरोध किया। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता की आत्मनिर्भरता तभी संभव है जब वे अपनी भाषाओं में शिक्षा और प्रशासन चलाएं। उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत की और कहा कि प्रशासन और न्याय व्यवस्था में भारतीय भाषाओं का उपयोग होना चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि सांस्कृतिक विविधता भारत की ताकत है, लेकिन विदेशी प्रभाव से बचना चाहिए। उनका मानना था कि भारत को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहकर ही आधुनिक विकास करना चाहिए।

4. किसान और मजदूर आंदोलन– लोहिया किसानों और मजदूरों के अधिकारों के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कृषि सुधारों और मजदूरों के अधिकारों के लिए कई आंदोलनों का नेतृत्व किया। उनका मानना था कि जब तक समाज का सबसे निचला तबका आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त नहीं होगा, तब तक लोकतंत्र अधूरा रहेगा।

उन्होंने न्यूनतम मजदूरी, भूमि सुधार और किसानों को सस्ते ऋण उपलब्ध कराने की नीतियों का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि देश का असली विकास तभी संभव होगा जब ग्रामीण भारत को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जाएगा।

5. शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन– लोहिया का मानना था कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम है। उन्होंने बुनियादी शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया और कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक जागरूक और समानतावादी समाज का निर्माण करना भी होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि भारत की शिक्षा प्रणाली को स्वदेशी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जाना चाहिए। उन्होंने शिक्षा में व्यावसायिक प्रशिक्षण और व्यावहारिक ज्ञान को अधिक महत्व देने की वकालत की।

6. आर्थिक समानता और समाजवाद– लोहिया आर्थिक असमानता के खिलाफ थे और समाजवादी अर्थव्यवस्था के पक्षधर थे। उन्होंने कहा कि समाज में गरीब और अमीर के बीच की खाई को कम किया जाना चाहिए। उन्होंने छोटे उद्योगों और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने की बात कही, ताकि हर व्यक्ति को रोजगार मिल सके। उनका मानना था कि सरकार को आर्थिक नीतियां इस तरह बनानी चाहिए कि वे आम जनता के हित में हों, न कि केवल बड़े उद्योगपतियों के। उन्होंने पूंजीवादी शोषण का विरोध किया और कहा कि समाज में समान आर्थिक अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 10, October 2023

डॉ. राममनोहर लोहिया के विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त असमानता, शोषण और जातिगत भेदभाव को समाप्त करने के लिए संघर्ष किया। उनके समाजवादी विचारों ने न केवल पिछड़े और वंचित वर्गों को सशक्त करने का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि लोकतंत्र को अधिक समावेशी और न्यायसंगत बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने 'सप्तक्रांति' के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सुधारों की वकालत की। उनके द्वारा प्रस्तुत गैर–कांग्रेसवाद, पिछड़े वर्गों के लिए 60% आरक्षण की नीति और भारतीय भाषाओं के उत्थान संबंधी विचारों ने भारतीय राजनीति और समाज को नई दिशा दी।

उनके विचारों का प्रभाव भारतीय राजनीति में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मंडल आयोग की सिफारिशें, भारतीय भाषाओं को शिक्षा और प्रशासन में प्राथमिकता देने की नीति, और महिला सशक्तिकरण से जुड़े कई सरकारी कार्यक्रम उनके विचारों से प्रेरित हैं। उनका यह मत कि समाजवाद केवल आर्थिक समानता तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह सामाजिक और राजनीतिक न्याय को भी सुनिश्चित करे, आज भी नीति निर्माताओं को मार्गदर्शन देता है।

लोहिया के विचारों को अगर समकालीन संदर्भ में देखें, तो वे वैश्वीकरण और उदारीकरण के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। उन्होंने पूंजीवाद के एकाधिकार का विरोध किया और कहा कि जब तक समाज के सबसे कमजोर वर्ग को बराबरी का अधिकार नहीं मिलेगा, तब तक लोकतंत्र अधूरा रहेगा। उनका श्अंग्रेजी हटाओश आंदोलन इस बात का प्रतीक था कि भारत को आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए और अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजना चाहिए।

आज भी उनकी विचारधारा भारत के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए मार्गदर्शक बनी हुई है। समतामूलक समाज की स्थापना, लैंगिक समानता, आर्थिक न्याय, और शोषणमुक्त समाज की परिकल्पना को साकार करने के लिए लोहिया के विचारों से प्रेरणा ली जा सकती है। उनका दर्शन हमें यह सिखाता है कि सच्चे लोकतंत्र और समाजवाद की प्राप्ति के लिए निरंतर संघर्ष आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची–

- लोहिया, राममनोहर (1964)। इतिहास चक्र। नवहिंद प्रकाशन।
- जोशी, श्याम सुंदर (1975)। डॉ. लोहिया और भारतीय समाजवाद। राजकमल प्रकाशन।
- यादव, रामगोपाल (2001)। भारतीय समाजवाद के प्रवर्तक। पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस।
- मिश्रा, अशोक (2015)। लोहिया के विचार और समकालीन भारत। साहित्य प्रकाशन।
- तिवारी, रमेश (1998)। समाजवाद और लोहिया। लोकभारती प्रकाशन।
- शुक्ला, देवेंद्र (2004)। भारतीय राजनीति में लोहिया का योगदान। प्रकाशन विभाग।
- सिंह, रामशरण (2010)। लोहिया के सपनों का भारत। वाणी प्रकाशन।
- वर्मा, सत्यदेव (2012)। राममनोहर लोहिया के विचार और समाजवादी आंदोलन। साहित्य भवन।
- गुप्ता, अरुण (2008)। भारतीय समाजवाद की धारा। नीलम प्रकाशन।
- प्रसाद, नरेश (2016)। समाजवादरू लोहिया से आज तक। ज्ञान गंगा प्रकाशन।
- शर्मा, मोहनलाल (2009)। डॉ. लोहिया और भारतीय लोकतंत्र। साक्षी प्रकाशन।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 10, October 2023

- चौधरी, महेश (2017)। भारतीय राजनीतिक चिंतन में लोहिया। युगान्तर प्रकाशन।
- पटेल, गणेश (2011)। डॉ. लोहिया के समाजवादी सिद्धांत। लोकमित्र प्रकाशन।
- त्रिपाठी, राकेश (2014)। भारत में समाजवादी क्रांति। साहित्य संगम प्रकाशन।
- कुमार, अजय (2019)। राममनोहर लोहियारू विचार और दर्शन। अभिनव प्रकाशन।
- दुबे, कमलेश (2015)। लोहिया और समकालीन भारत। भारतीय विद्या प्रकाशन।
- नायक, सुरेश (2020)। डॉ. लोहिया की समाजवादी दृष्टि। विद्या निकेतन प्रकाशन।